झारखंड की राजनीति में महिलाओं की भागीदारी का अध्ययनः झारखंड विधान सभा के विशेष संदर्भ में (2000 ई.से 2023 ई.तक)

बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल विश्वविधालय, धनबाद

विश्वविधालय के राजनीतिक विज्ञान विभाग में

पीएच.डी. की उपाधि हेतु प्रस्तावित

शोध–प्रबंध का सार

शोधार्थी

तलत परविन

पंजीयन संख्या...

विश्वविधालय राजनीति विज्ञान विभाग

बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल विश्वविधालय, धनबाद

शोध निदेशक

डॉ. धर्मेंद्र कुमार सिंह

असिस्टेंट प्रोफेसर

राजनीति विज्ञान विभागः बी.एस. सिटी कॉलेज (बोकारो)

बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल विश्वविधालय, धनबाद

दिसंबर, 2023

भूमिका (Introduction):

इस संसार में शायद ही ऐसा कोई समाज होगा जो अब तक राजनीति से अछूता रहा हो। वर्तमान समय में राजनीतिक क्षेत्र में आने के लिए राजनीतिक भागीदारी एक महत्वपूर्ण कदम है। प्रजातंत्र को सफल बनाने और शासन को सही ढंग से चलाने के लिए राजनीतिक भागीदारी आवश्यक होती है। यहाँ राजनीतिक भागीदारी का अर्थ महिलाओं और पुरूषों की समान भागीदारी से है। इससे राजनीतिक व्यवस्था को स्थायित्व और वैधता की प्राप्ति होती है, साथ ही साथ प्रशासनिक जवाबदेही में भी अधिक वृद्धि होती है और भ्रष्टाचार पर रोक लगाने में भी मद्द मिलती है। राजनीतिक सहभागिता प्रजातंत्र को सफल बनाने का एक बेहतर उपाय है। सरकार सिर्फ राष्ट्रीय एवं विश्वस्तरीय विषयों पर ही महत्वपूर्ण फैसले नही लेती है बल्कि उन सभी विषयों पर भी फैसले लेती है जो महिलाओं के जीवन को बहुत अधिक प्रभावित करते हैं। विश्व की आधी आबादी महिलाओं की है बावजूद इसके राजनीति में उनकी संख्या बहुत कम है। आज के समय में भी महिलाएँ अपने राजनीतिक अधिकारों का प्रयोग सही ढंग से नही कर पा रही है क्योंकि उनके राजनीतिक अधिकारों पर पुरूषों का ही दबदबा है। राजनीति जो सार्वजनिक जीवन का ही एक क्षेत्र माना जाता है, स्त्रियों का स्वागत नही करती है बावजूद इसके अब महिलाएँ अपने बलबूते पर राजनीति के उच्चतम पदों पर आ पहुंची है, उन्हें प्रत्येक क्षेत्र में सफलता प्राप्त हुए हैं, सिविल सर्विस में महिलाओं की सफलता प्रशंसनीय है, अब महिलाएँ अपने सपनों और अभिलाषाओं को अपने शर्तो पर साकार कर रही है। प्राचीन काल से ही महिलाओं के राजनीतिक अधिकारों की डकैती होती रही है, और आज भी हो रही है, आज भी महिलाएँ निर्णय लेने में पूरी तरह से स्वतन्त्र नही हैं, उन्हें द्वितीय श्रेणी का माना जाता है, उनके साथ अमानवीय बर्ताव किया जाता है। महिलाएं किसी भी समाज की आधारशिला होती हैं इस सम्बंध में कई विद्वानों ने अपने–अपने विचार दिए हैं, बाबा साहेब अम्बेडकर जी ने कहा था कि ''मैं किसी समाज की प्रगति का अनुमान इस बात से लगाता हुं कि उस समाज की महिलाओं की कितनी प्रगति हुई है। किसी भी देश के सामाजिक राजनीतिक और आर्थिक उन्नती में महिलाओं का विशेष योगदान होता है।'' स्वामी विवेकानंद जी ने कहा था कि ''स्त्रियों की अवस्था में सुधार लाए बिना विश्व कल्याण असम्भव है उस प्रकार से जैसे कि एक पंख से उड़ान भरना।'' कई विद्वानों ने महिलाओं और पुरूषों के समान अधिकारों की बात कही है बावजूद इसके आजादी के कई वर्ष बीत जाने के बाद भी महिलाओं की स्थिती में ज्यादा सुधार नही हो पाया है, आज भी हम जिसे उन्नत और सभ्य समाज कह रहे हैं उसी समाज की जनगणना रिपोर्ट के मुताबिक बच्चियों की जन्म दर कम हो रही है, दहेज के नाम पर घरेलू हिंसा, शोषण और हत्या अब तक जारी है, परन्तु अब महिलाएँ अपने शोषण के विरूद्ध आवाज उठाने लगी हैं, अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हो रही है, महिलाएँ अब बोलने लगी हैं।

झारखंड जिसका इतिहास बहुत ही पुराना है। यहाँ आदिमानव काल से लेकर प्लास्टिक युग तक के प्रमाण उपलब्ध है। झारखंड में आ कर बसने वालों में सर्वप्रथम नाम मुंडा जाति का आता है। झारखंड राज्य का निर्माण 15 नवंबर 2000 ई. को बिहार के 18 जिलों को मिलाकर बनाया गया है, वर्तमान समय में झारखंड में कुल 24 जिले है। झारखंड विधानमंडल द्विसदनीय नही है बल्कि एक सदनीय ही है। झारखंड की कुल जनसंख्या की आधी आबादी महिलाओं की है, बावजूद इसके झारखंड विधान सभा में महिला प्रतिनिधियों की संख्या बहुत कम है। झारखंड राज्य के निर्माण के बाद झारखंड

की महिलाओं के विकास की ओर ज्यादा ध्यान नहीं दिया गया, वोट की खातिर महिलाओं से झूठे वादे किए जाते रहे और उन्हें ठगा जाता रहा है। झारखंड विधान सभा में विधायकों ने अपने स्वार्थ के लिए विधान सभा की गरिमा को ठेस पहुंचाई, सदन की कार्यवाही को बाधित किया। राजनीतिक दलों के द्वारा महिलाओं को चुनाव लड़ने के लिए प्रर्याप्त टिकट नही दिए गए। जिस प्रकार से सत्ता के लिए नैतिक अनैतिक गठजोड हुए वह महिलाओं की उन्नति में भी बाधक साबित हुए। झारखंड के विकास के लिए यह जरूरी है कि यहाँ की आदिवासी महिलाओं को राजनीति में भी बराबर का स्थान मिले। जिस प्रकार आदिवासी महिलाओं का शोषण हो रहा है, वह झारखंड राज्य के विकास में बाधक है। महिलाओं को राजनीति में समान अवसर मिलने से महिलाएँ अधिक सबल होंगी और झारखंड की आदिवासी संस्कृति के संरक्षण को भी अधिक बढ़ावा मिलेगा। झारखंड की आदिवासी महिलाएँ गैर आदिवासी महिलाओं की तुलना में अधिक स्वच्छंद है, वे प्रकृति से जुडी हुई हैं। आदिवासी समुदाय में दहेज प्रथा प्रचलित नही है बल्कि आदिवासी समुदाय में वधू की कीमत होती है, महिलाएँ घर और बाहर दोनो जगहों पर भूमिका निभाती हैं। भले ही पुरूषों के द्वारा महिलाओं को राजनीतिक क्षेत्र से दूर रखा जाता है लेकिन महिलाएँ अपने कर्तव्य को भली भांती निभाना जानती हैं। पिछले कई चुनाव में महिलाओं के मतदान के प्रतिशत में तेजी से बढ़ोतरी यह संकेत देते है कि मतदान के प्रति महिलाओं का रूझान लगातार बढ़ रहा है। अब महिलाएँ उम्मीदवार के रूप में भी चुनावी मैदान में उतर रही हैं, चुनाव लड़ रही हैं और जीत हासिल कर रही हैं। महिलाओं में राजनीति के प्रति उत्साह साफ देखा जा सकता है।

<u>साहित्य अवलोकन (Litrature Review)</u>:

किसी भी शोध में संबधित साहित्य से तात्पर्य, शोध की समस्या से सम्बन्धित उन सभी तरह के पत्र, पुस्तकें, जर्नल, लेख, अभिलेख इत्यादि से है जिनका अध्ययन करने से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चुनाव में मद्द मिलती है, उपकल्पना के निर्माण तथा अध्ययन की रूपरेखा बनाने और कार्य को योजना अनुसार आगे बढ़ाने में भी मद्द मिलती है।

दिवान, (2015)[1], ने अपनी पुस्तक झारखण्ड की महिलाएँ,में झारखण्ड राज्य की महिलाओं से सम्बन्धित अत्यंत महत्वपूर्ण जानकारियों का उल्लेख किया है। इस पुस्तक में झारखंड की महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक स्थितियों का विस्तारपूर्वक वर्णन मिलता है, साथ ही साथ इस पुस्तक से यह भी मालूम पड़ता है कि यहाँ की महिलाओं ने किस प्रकार आन्दोलन में अपने साहस और बलिदान से झारखंड की धरती को धनी बनाया, अपना गृहस्थ जीवन छोड़ कर झारखंड के आंदोलन में कूद पड़ी और झारखंड के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इसके अलावा झारखंड की राजनीति में महिलाओं की भागीदारी, महिला प्रतिनिधियों के सामने आने वाली चुनौतियाँ, पंचायती राज्य में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी, खदानों में काम करने वाली महिलाओं की स्थिति इत्यादि की भी जानकारी इस पुस्तक से मिलती है, यह पुस्तक शोध कार्य हेतु ज्ञानवर्धक सिद्ध होगा।

देसाई. (2021)[2],ने भारतीय समाज में महिलाएँ,नामक पुस्तक में महिलाओं की राजनीतिक सहभागिता के अर्थ एवं महिलाओं की राजनीतिक सहभागिता की वर्तमान स्थिति का विस्तार से वर्णन किया है। इस पुस्तक के अध्ययन से महिलाओं में बढ़ती जागरूकता,

संसदीय और विधान सभा चुनावों में महिलाओं की भागीदारी, शिक्षा के जरिए महिलाओं कों समर्थ बनाने और संविधान में वर्णित उनके अधिकारों का भी वर्णन किया है। साथ ही साथ घरेलू हिंसा, विधि के प्रति महिलाओं की कम जानकारी उन के विकास में किस तरह बाधा उत्पन्न करता है तथा महिलाएँ पुरूषों की तुलना में क्यों पिछड़ी हुई हैं इसकी भी जानकारी इस पुस्तक में दी गई है। इस पुस्तक के गहन अध्ययन से भारतीय समाज की महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एंव शैक्षिक स्थिति पर भी विशेष रूप से प्रकाश पड़ता है तथा आर्थिक स्थिति से सम्बन्धित कई प्रकार के आँकड़े भी इस पुस्तक में दिए गए हैं, जो जनगणना पर आधारित है और इस शोध कार्य में बहुत महत्व रखते हैं।

तिवारी.(2012)[3], झारखंड की रूपरेखा, इस पुस्तक में झारखंड राज्य के इतिहास, भूगोल, जनजातियाँ एवं राजकीय व्यवस्था का विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है। झारखंड जिसका इतिहास सदियों पुराना है और यहाँ आदिवासियों की अधिकता है, इस पुस्तक के अध्ययन से झारखंड के आदिवासियों से सम्बन्धित उनकी संस्कृति, परम्परा, लोकनृत्य, कला, उनकी सामाजिक एवं राजनीतिक मान्यताएँ, धर्म, भाषा, रहन सहन, पहनावा, पेशा, त्योहार, जनजातीय रूपरेखा, जनजातियों की समस्याएँ इत्यादि के बारे में काफी अधिक जानकारी मिलती है, तथा इस पुस्तक में जनगणना पर आधारित आदिवासियों से सम्बन्धि कई प्रकार के आंकड़े भी दिए गए है जो इस शोध कार्य में अधिक महत्व रखते है।

सिन्हा.(2019)[4], झारखंड राज्य से सम्बन्धित पुस्तक झारखंड राजनीति और हालात,में झारखंड की राजनीति के बारे में अत्यधिक महत्वपूर्ण जानकारी दी गई है। झारखंड विधान सभा के बारे में दी गई जानकारी बेहद महत्वपूर्ण है। इस पुस्तक के अध्ययन से यह पता चलता है कि किस प्रकार से विधायकों ने अपने हित और स्वार्थ के कारण झारखंड विधान सभा की गरिमा को ठेस पहुंचाई, सदन को बेवजह बाधित किया, विधायक सिर्फ और सिर्फ अपने सुविधाओं और वेतन को बढ़ाने में लगे रहे। सरकार में उठा पटक और तबादले का अजीब सा चक्र चलता रहा, विधायक अपने में ही उलझे रहे। महिलाओं की ओर ध्यान नही दिया गया। राजनीतिक दलों के आपसी मनमुटाव से किस तरह झारखंड के विकास पर असर पड़ा तथा राजनीति में कैसे महिलाओं की लगातार अनदेखी होती रही, केवल झूठे वादे और महिलाओं को वोट के नाम पर ठगा जाता रहा इत्यादि की जानकारी मिलती है।

कुमार. (2021)[5], की पुस्तक झारखंड, में झारखंड राज्य के भौगोलिक क्षेत्र का विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है, इस पुस्तक के अध्ययन से झारखंड की प्रशासनिक गठन एवं झारखंड के आर्थिक स्वरूप को समझने में काफी सहायता मिलती है। झारखंड के अनुसूचित जनजाति, अनुसूचित जाति तथा अन्य के आरक्षण का भी इस पुस्तक में उल्लेख मिलता है जो शोध कार्य में महत्वपूर्ण है।

विरोत्तम.(2017)[6],झारखंडः इतिहास एवं संस्कृति, में 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में झारखंड के राजवंशों, महिलाओं, सामंतों और अभिजनों की भूमिका का विस्तार से वर्णन मिलता है। इसके अलावा झारखंड के अन्य आंदोलनों की भी जानकारी मिलती है। इस

पुस्तक के गहन अध्ययन से यह भी मालूम पड़ता है कि झारखंड क्षेत्र में अधिकतर जागीरदारों ने सरकार के खिलाफ आम जनता का साथ दिया था। 1857 की क्रांति में दंडित होने वाले लोगों की लंबी सूची से यह मालूम पड़ता है कि इस क्रांति में समाज के सभी वर्ग के लोगों ने बढ–चढ कर भाग लिया था। पलामू, मानभूम, तथा आधुनिक राँची क्षेत्र से इस आंदोलन में बहुत अधिक संख्या में महिलाओं और पुरूषों ने निःस्वार्थ भाव से शामिल हो कर इस आंदोलन को एक जनविद्रोह में बदल दिया और महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

चौबे. (2023)[7],ने झारखंड की राजनीति पर प्रकाश डालते हुए अपनी पुस्तक झारखंड एक बेचैन राज्य का सुख, में झारखंड राज्य के राजनीति से सम्बन्धित अधिक महत्वपूर्ण जानकारी दी है। झारखंड की मांग आजादी के पहले से ही होने लगी थी। इस मांग ने 80 के दशक में जोर पकडा, बिनोद बिहारी महतो, कॉमरेड ए.के.राय और शिबू सोरेन ने झारखंड मुक्ति मोर्चा का गठन किया। झारखंड के निर्माण का एक बहुत ही लंबा इतिहास रहा है। झारखंड के निर्माण के बाद राज्य की पहली विधान सभा के गठन से ले कर पाँचवीं विधान सभा के गठन तक के महत्वपूर्ण राजनीतिक घटनाक्रमों, साजिशों, सत्ता के लिए नैतिक अनैतिक गठजोड़ों और घपलों की पूरी जानकारी इस पुस्तक के अध्ययन से मिलती है, जो इस शोध कार्य हेतु सहायक हैं।

मीणा.(2016)[8], आदिवासी समाज,साहित्य और राजनीति, पुस्तक में आदिवासी समुदायों और उनके राजनीतिक संघर्ष का गहराई वर्णन किया गया है। इस पुस्तक से पता चलता है कि झारखंड राज्य के आदिवासी भी भारत के अन्य राज्यों के आदिवासी समुदायों के तरह ही वर्षों से संघर्ष कर रहे हैं। झारखंड राज्य के आदिवासी सदियों से जमींदारों, महाजनों और अभिजनों की लूट खसोट व अंग्रेजों की जनविरोधी नीतियों के विरूद्ध विद्रोह करते रहे हैं। इन विद्रोहों में यहाँ की महिलाओं ने भी बराबर की भूमिका निभाई है। झारखंड निर्माण के बाद भी आदिवासी महिलाएँ शोषण का शिकार रही हैं। झारखंड के आदिवासियों को शोषण से मुक्त करने में बिरसा मुंडा, तिलका मांझी, तेलंगा खडिया, सिद्धू–कान्हू आदि के बलिदान महत्वपूर्ण रहे हैं। झारखंड के आदिवासी समुदाय के लोग आज भी बाहरी लोगों के दखल से मुक्त नहीं है, उनकी ज़मीने छीनी जा रही है। तब से लेकर आज तक आदिवासी समुदाय के लोग लगातार उजाड़े और लूटे जा रहे हैं।

गौंझू. (2019)[9],ने झारखंड के विभूति एवं शहीदों का वर्णन करते हुए झारखंड के उन वीर पुरूषों की चर्चा की है जिन्होंने अपना खून पसीना बहा कर झारखंड की धरती को अंग्रजों से मुक्त कराया और झारखंड की सभ्यता एवं संस्कृति को लुप्त होने से बचाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।

राम. (2009)[10],ने अपनी संपादित पुस्तक वूमन एम्पावरमेन्ट इन पॉलिटिकल इंस्टीटयूशनसःएन इंडियन परसपेक्टिव,में महिला सशक्तिकरण से सम्बन्धित जानकारी, राजनीतिक संस्थाओं में स्त्रियों की सहभागीता, पंचायती राज संस्थाओं में स्त्रियों का योगदान,एवं लोकसभा, राज्यसभा तथा पंचायती राज में महिलओं के लिए आरक्षण की व्यवसथा के बारें में विस्तार से चर्चा किया है।

बिंझा. (2021)[11],ने झारखंड से सम्बंधित अपने कार्य में महिला सशक्तिकरण का वर्णन झारखंड की आदिवासी महिलाओं के संदर्भ में किया गया है। इस जर्नल के अध्ययन से मालूम पड़ता है कि आदिवासी समाज में महिलाएँ अपने सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। आदिवासी समाज में लड़कियों और महिलाओं को पुरूषों के बराबर दर्जा दिया जाता है, उनका जीवन सरल और सहज है, वे प्रकृति से जुड़ी हुई हैं। आदिवासी महिलाएँ आर्थिक बोझ को भी मिल कर साझा करती है तथा परिवार की सारी जिम्मेदारी भी निभाती है, बावजूद इसके वो राजनीति में पिछड़ी हुई है। आरक्षण के बाद भी वे राजनीति में स्थान बना पाने में असमर्थ हैं। इस जर्नल के अध्ययन से आदिवासी महिलाओं की चुनौतियों की भी जानकारी मिलती है तथा उनसे सम्बन्धित सुझाव भी पेश किए गए है, जो महत्वपूर्ण हैं।

द्विवेदी. (2022)[12],रीवा जिले के महिलाओं की राजनीतिक सहभागिता दशा और दिशा,इस जर्नल में महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी की स्थिति से सम्बन्धित जानकारी मिलती है। राजनीति में महिलाएँ किस प्रकार सक्रिय भूमिका निभा रही हैं, उनका राजनीति में योगदान देने से अन्य महिलाओं में क्या सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है, किस प्रकार महिलाओं में आत्मविश्वास की भावना में वृद्धि हो रही है इत्यादि की जानकारी मिलती है।

समस्या का शोध अन्वेषण (Problem to be investigated):

- झारखंड में बहुत से आंदोलन हुए हैं फिर चाहे वह झारखंड के अलग राज्य के निर्माण को लेकर आंदोलन हुआ हो या फिर यहाँ की जमींदारी प्रथा को खत्म करने को लेकर आंदोलन हुआ हो इसमें झारखंड की महिलाओं का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। जो आज के युवा पीढ़ी और समाज झारखंड की महिलाओं के उस त्याग और बलिदान को या तो भूलते जा रहे हैं या उन जानकारियों से बिल्कुल अपरिचित हैं, जो रूतबा, मान सम्मान और स्थान, झारखंड की महिलाओं को मिलना चाहिए था वो अब तक उन्हें नही मिल पाया है। उनका बलिदान भी अब धूमिल पडता जा रहा है। महिलाओं पर आरोप प्रत्यारोप लगाकर पुरूषों के द्वारा उन्हें राजनीति में पीछे रखा जा रहा है।

- यदि हम झारखंड राज्य के शासन व्यवस्था की बात करें तो यहाँ की शासन व्यवस्था एक सदनीय है। इस राज्य की विधान सभा के लिए कुल मिला कर 81 निर्वाचित सीटें हैं। झारखंड राज्य के 81 विधान सभा सीटों में से अनुसूचित जनजातियों के लिए 28 स्थान आरक्षित हैं, अनुसूचित जाति के लिए 9 स्थान आरक्षित हैं और सामान्य वर्ग के लिए 44 स्थान आरक्षित किए गए हैं, बावजूद इसके महिलाओं को राजनीति में बराबर का स्थान नही मिल पा रहा है।

- झारखंड राज्य के लोहरदगा, गुमला, एवं सिमडेगा के सभी विधान सभा निर्वाचन क्षेत्र अनुसूचित जनजातियों के लिए आरक्षित हैं, इतना ही नहीं झारखंड राज्य से लोक सभा के 14 निर्वाचन क्षेत्रों में से 6 क्षेत्र अनुसूचित जनजातियों के लिए और

1 क्षेत्र अनुसूचित जाति के लिए आरक्षित है परन्तु अफसोस की बात तो यह है कि स्थानों के आरक्षण के बाद भी चाहे अनुसूचित जनजातियों की महिलाएँ हो या अनुसूचित जातियों की महिलाएँ हो या सामान्य वर्ग की महिलाएँ हो राजनीति में सभी महिलाओं की संख्या ना के बराबर है।

- यह भी एक बहुत बडी निराशा की बात है कि झारखंड की जिन महिलाओं ने इतनी लड़ाईयाँ लड़ी, अपना घर–बार सुख चैन सब कुछ खोकर जनजातीय समाज तथा झारखंड के आन्दोलन को पुरूषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर सफलतापूर्वक मंजिल तक पहुंचाया आज उन महिलाओं के योगदानों को भी महत्व नही दिया जा रहा है। झारखंड की अन्य महिलाएँ भी राजनीतिक रूप से काफी पिछड़ी हुई हैं। ऐसा लगता है कि महिलाओं के योगदान के प्रति लोगों में कम जानकारी है। अतः इस सम्बन्ध में झारखंड की महिलाओं की राजनीतिक सहभागिता तथा तत्कालीन परिस्थितियों को समझने और तथ्यों का मूल्यांकन करने के लिए यह अनुसंधान बहुत आवश्यक है।

शोध का उद्देश्य (Research Objectives):

- राजनीतिक सहभागिता क्या होती है ? राजनीतिक सहभागिता लोकतन्त्र के विकास में किस तरह भूमिका निभाती है, इसका गहन अध्ययन एवं विश्लेषण करना।

- झारखंड की महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षिक स्थिति का अध्ययन करके उनकी समस्याओं को सामने लाना।

- झारखंड की महिलाओं की राजनीतिक सहभागिता में वर्तमान स्थिति क्या है, तथा सन् 2000 ई. से 2023 ई. तक झारखंड विधान सभा में निर्वाचित महिला विधायकों का प्रतिशत क्या है एवं उनके सामने क्या बाधाएँ आई इसका पता लगाना।

- झारखंड के राजनीतिक दलों की अस्थिरता का महिलाओं के राजनीतिक भागीदारी पर क्या प्रभाव पडा है इसका अध्ययन करना।

- झारखंड विधान सभा में महिलाओं के राजनीतिक प्रतिनिधित्व और शासन पर प्रभाव का अध्ययन करना एवं महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी में वृद्धि हेतु किए जा सकने वाले प्रयासों का अध्ययन करना।

प्राकल्पना (Hypothesis):

- राजनीतिक सहभागिता लोकतन्त्र को मजबूत करती है।

- झारखंड की महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षिक स्थिति का भी उनकी राजनीतिक भागीदारी पर प्रभाव पड़ता है।

- झारखंड विधान सभा चुनाव में महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी में बढ़ोतरी से झारखंड की अन्य महिलाओं में भी जागरूकता आएगी।

- झारखंड के राजनीतिक दलों की अस्थिरता पर रोक से महिलाओं की राजनीतिक सशक्तिकरण को और अधिक बल मिलेगा।

- स्त्री शिक्षा और जागरूकता कार्यक्रमों के द्वारा झारखंड विधान सभा में महिलाओं के राजनीतिक प्रतिनिधित्व और शासन पर प्रभाव को गति प्रदान किया जा सकता है।

शोध प्रविधि एवं रूपरेखा (Research design and methodology):

प्रस्तुत शोध प्राथमिक एवं द्वितीय स्त्रोतों, तथ्यों एवं दस्तावेजों पर आधारित होगा और ऐतिहासिक, वर्णात्मक, मात्रात्मक और विश्लेषणात्मक पद्धति का प्रयोग किया जाएगा तथा प्राथमिक स्त्रोत के अंतर्गत सभी प्रकार के अधिकारिक दस्तावेज,निर्वाचन सम्बन्धी रिर्पोटस, झारखंड के पुरूष और महिला प्रतिनिधियों तथा अन्य के साक्षात्कार और प्रश्नावली के माध्यम से तथ्यों का संग्रहण किया जाएगा। द्वितीय स्त्रोतों के अंतर्गत विषय सम्बन्धी पत्रिका, साहित्य ग्रंथ, समाचार पत्र, इत्यादि का प्रयोग किया जाएगा। द्वितीयक आंकडों के लिए प्रकाशित एवं अप्रकाशित दोनों स्त्रोतों, पुस्तकालयों (1.नेशनल लाइब्रेरी कोलकाता, 2. खुदाबख्श लाइब्रेरी पटना) आदि का प्रयोग किया जाएगा।

प्रस्तावित शोध का महत्व (Significance of proposed work):

भारत में शुरूआत से ही स्त्रियों को देवी यानी पूजनीय स्थान दिए जाने की बात कही जाती रही है, लेकिन सच तो यह है कि व्यवहारिक रूप से महिलाओं की राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति सोचनीय बनी हुई है। भारत की आजादी के समय से ही स्त्रियों को कई अधिकार दे दिए गए हैं बावजूद इसके आजादी के कई साल बीत जाने के बाद भी स्त्रियों की स्थिति में ज्यादा सुधार नही हो पाया है, यही कारण है कि वे राजनीति में अब तक अपना स्थान बना पाने में नाकाम हैं। महिलाएँ तभी सशक्त हो सकती हैं जब उन्हें राजनीतिक अवसर समान रूप से मिलेगा। यह अवसर संसदीय क्षेत्र, विधान सभा क्षेत्र एवं अन्य क्षेत्रों में भी दिए जाने की जरूरत है। झारखंड की स्त्रियों द्वारा झारखंड राज्य के बनने से पहले या झारखंड राज्य के बनने के बाद जितना भी त्याग, बलिदान या राजनीतिक भागीदारी निभाई गई है, वह कहीं से भी कम नही है। झारखंड राज्य की मांग से लेकर झारखंड के निर्माण और अब झारखंड राज्य के विकास तक महिलाओं की भागीदारी को कहीं से भी नकारा नही जा सकता है। झारखंड की स्त्रियाँ झारखंड की मजबूत आधार स्तम्भ की तरह है जिसे झूठलाना असम्भव है।

आज के समय में स्त्रियों की राजनीतिक भागीदारी को व्यवहारिक रूप से और अधिक बढाने के लिए उन समस्याओं को जानना बेहद जरूरी है जिनके कारण महिलाएँ राजनीतिक भागीदारी सक्रिय रूप से नही निभा पाती हैं। अतः झारखंड की महिलाओं से सम्बन्धित ऐसे शोध की बेहद जरूरत है। बिना झारखंड की महिलाओं के सहयोग के झारखंड राज्य के विकास की कल्पना कपोल कल्पित हैं। इस अध्ययन के परिणाम भी राजनीति में महिलाओं की सहभागिता के प्रति उन्हें जागरूक करेंगे और उनका राजनीति में रूझान बढ़ेगा।

अनुसंधान की सीमाएं और भविष्य के कार्य (Rresearch Limitations and Future Work):

अनुसंधान की प्रक्रिया एक बहुत ही व्यापक और जटिल प्रक्रिया होती है। इसकी व्यापकता शोधार्थियों को दिशाहीन कर सकती है, वे लक्ष्य से भटक सकते हैं। इसलिए अनुसंधान के कार्य को उसके आखिरी लक्ष्य तक पहुंचाने के लिए अनुसंधान के विषय की सीमाएं तय करना बेहद जरूरी हो जाता है। प्रस्तावित अनुसंधान की अभिकल्प का कार्य झारखंड की राजनीति में महिलाओं की सहभागिता से सम्बन्धित, झारखंड विधान सभा में महिला प्रतिनिधियों की भूमिका, उनकी स्थितियों, झारखंड की राजनीति में आए बदलाव के परिक्षण से जुड़े निष्कर्ष तक पहुंच कर शोध कार्य को पूरा किया जा सके, इसके लिए प्रस्तावित शोध के अध्ययन को झारखंड तक ही सीमित रखा जाने का प्रयास रहेगा।

इस अनुसंधान कार्य में भविष्य का कार्य होगा कि, इसे पुस्तक का रूप दिया जा सकता है, क्योंकि ऐसे अध्ययन भविष्यकाल के अध्ययनों के लिए साहित्य भी प्रदान करते है ताकि इन अध्ययनों का आगे चल कर अकादमिक रूप में प्रयोग हो सके और शिक्षार्थियों को मद्द मिल सके। राजनीति विज्ञान की पढाई करने वाले छात्र—छात्राओं के लिए यह बेहद कारगर और उपयुक्त भी साबित होगा। झारखंड की महिलाएँ एवं उनका राजनीति से सम्बन्ध रखने वाले किसी भी अनुसंधान कार्य में भी यह बेहद लाभदायक साबित होगा क्योंकि झारखंड में ऐसे शोध और पुस्तकों की बेहद कमी है। इतना ही नही यहाँ की स्त्रियों के बारें में किसी वर्णन शृंखला या और भी कोई अनुसंधान कार्य में इसका उपयोग आसानी से किया जा सकेगा और इस अनुसंधान कार्य पर सेमिनार आदि का भी आयोजन किया जा सकेगा। राजनीति विज्ञान में महिला प्रतिनिधियों की भूमिका को और अधिक रेखांकित करने का काम हो सकेगा तथा स्त्रियों की राजनीतिक सहभागिता को और अधिक विस्तृत ढ़ंग से जानने को लेकर अनुसंधान कार्य किया जा सकेगा।

संभावित अध्यायीकरण (Tentative chapterisation):

प्रस्तुत शोध रूपरेखा ''झारखंड की राजनीति में महिलाओं की भागीदारी का अध्ययनः झारखंड विधान सभा के विशेष संदर्भ में (2000 ई. से 2023 ई. तक)'' को प्रमुख रूप से पाँच (5) अध्यायों में विभाजित किया गया हैः—

भूमिका

अध्याय 1. झारखंड आंदोलन में महिलाओं की भूमिका

अध्याय 2. झारखंड की महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षिक पृष्ठभूमि

अध्याय 3. झारखंड की महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी में बाधाएँ और चुनौतियाँ

अध्याय 4. झारखंड के राजनीतिक दलों की अस्थिरता का महिलाओं पर प्रभाव

अध्याय 5. झारखंड विधान सभा में महिलाओं का राजनीतिक प्रतिनिधित्व और शासन पर प्रभाव

उपसंहार
ग्रंथ सूची

संदर्भ सूची (References):

1 दिवान, आर.,(2015),''*झारखंड की महिलाएँ,''* पटनाः बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, पृ0 सं0–81
2 देसाई,एन, ठक्कर, यू, (2021),''*भारतीय समाज में महिला महिलाएँ'',* नई दिल्लीः राष्ट्रीय पुस्तक न्यास भारत, पृ0 सं0–II
3 तिवारी,आर.के.,(2012),''*झारखंड की रूपरेखा,''* राँचीः शिवांग पब्लिकेशन, पृ0 सं0–190
4 सिंहा,ए.,के.,(2019), *''झारखंड राजनीति और हालात,''* नई दिल्लीः प्रभात पब्लिकेशन, पृ0 सं0–33
5 कुमार,ए, (2021), ''*झारखंड,''* नई दिल्लीः राष्ट्रीय पुस्तक न्यास भारत, पृ0 सं0–7
6 विरोत्तम,बी.,(2017),''*झारखंडः इतिहास एवं संस्कृति,''* पटनाः बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, पृ0 सं0–276
7 चौबे,एस.के., (2023), *''झारखंड एक बेचैन राज्य का सुख'',* नई दिल्लीः प्रभात प्रकाशन, पृ0 सं0–44
8 मीणा,के.पी, (2016), ''आदिवासी समाज,सात्यि और राजनीति'', दिल्लीः अनुज्ञा बुक्स, पृ0 सं0–135
9 गौंझू,जी.आर,(2019), *''झारखंड विभूति एवं शहीद,''* जमशेदपुरः स्पर्धा प्रकाशन, पृ0 सं0–3
10 राम**,**डी.एस,(2009), *''वूमन एम्पावरमेन्ट इन पॉलिटिकल इंस्टीटयूशनसः एन इंडियन परसपेक्टिव'',* दिल्लीः कनिष्क पब्लिशिंग हाउस, पृ0 सं0–35
11 बिंझा, पी, (2021), ''*चैलेंजेस एंड प्रोस्पेक्ट ऑफ एंपावरमेंट ऑफ ट्राइबल वूमेन विद रिफरेंस टू झारखंड'',* इंटरनेशनल जर्नल फॅर रिसर्च एंड इंजीनियरिंग एप्लीकेशंस एंड मैनेजमेंट, वाल्यूम– 6, इश्यू 7 पृ0 सं0 1–5
12 द्विवेदी, ए.के, (2022),''*रीवा जिले के महिलाओं की राजनीतिक सहभागिता दशा और दिशा'',* इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांस्ड रिसर्च इन साइंस कम्युनिकेशन एंड टेक्नोलॉजी, वाल्युम– 2, इश्यू 7 पृ0 सं0 1–7

<u>ग्रंथ सूची (Bibliography):</u>

- बोस,पी.(2010), *वूमेन रिजर्वेशन इन लेजिसलेच्यर एंड डिफेंस इकोनामिक एंड पॉलिटिक्स वीकली,* वॉल्यूम–45,न0.14 अप्रील 3–9 पृ 10–12
- दत्त,बी.(1994), *''कहानी झारखंडकी राजनीति की'',* नई दिल्लीः क्राउन पब्लिकेशन
- दास,वि.(1994), *''झारखंड कैसल ओवर द ग्रेव्स'',* नई दिल्लीः इंटर इंडिया प्रकाशन
- धवन,एच,(1998), *''महिला सशक्तीकरण'',*आगराः रावत पब्लिकेशन
- गुप्ता,के.के,(2006), *''महिला सशक्तिकरण व्यवस्था में महिलाओं की स्थिति'',* नई दिल्लीः बुक एनकलेव
- गोस्वामी,बी,(2016),*''इण्डियन वूमेन इन पॉलिटिक्स'',* नई दिल्लीः अभिषेक पब्लिकेशन,
- गिरी,वी.एम,(1998), *''एमेन्सीपेशन एंड एम्पावरमेंट ऑफ वूमेन'',* नई दिल्लीः ज्ञान पब्लिकेशन हाउस
- कृष्णराज,(1988), *''वूमेन एंड डेवलपमेंट'',* पूनाः एस.एस.प्रकाशन
- मिंज,एन. (2014), *''कहानी आदिवासी राजनीति की'',* रांचीः झारखंड झारोखा
- मेहता,सी.(1996), *''महिला एवं कानून'',* दिल्लीः आशीष पब्लिशिंग हाउस
- सेन,बि.(2007), *''रोल ऑफ वूमेनस नेशन बिल्डिंग'',* चंडीगढ.: अभिषेक पब्लिकेशन्स
- सक्सेना,के.(2001), *''वूमेन एण्ड पॉलिटिक्स '',* नई दिल्लीः ज्ञान पब्लिशिंग हाउस
- सेनगुप्ता,एन.(1982),*''फोर्थ वल्ड डायनेमिक्स झारखंड'',* दिल्लीः ऑथर्स गिल्ड पब्लिकेशन
- शर्मा, पी.(2011), *''महिला विकास और सशक्तिकरण '',* जयपुरः आविष्कार पब्लिशर्स
- सिंह,आर.सिंह,एम.(2006), *''भारत में महिलाएं,''* जयपुरः आविष्कार पब्लिशर्स
- सप्रू,आर.के.(1989), *''वूमेन एण्ड डवलपमेंट'',* नई दिल्लीः आशीष पब्लिशिंग हाउस
- ठाकुर,बी.(2006*), ''वूमेन इन गाधी मास मूवमेंट'',* नई दिल्लीः दीप एण्ड दीप पब्लिकेशन्स
- तनेजा,ए.(2005), *''गांधी वूमेन एण्ड द नेशनल मूवमेंट 1920–47'',* दिल्लीः हर आन्नद पब्लिकेशन्स
- उपाध्याय,एल.(2005),*''वूमेन इन इंडियन पॉलिटिक्स'',* पंचकुलाः बैटर बुक्स पब्लिकेशन्स